SHODH SAGAR®
Universal Research Reports
ISSN: 2348-5612 | Vol. 10 | Issue 4 | Oct - Dec 2023 | Peer Reviewed & Refereed

महर्षि अरबिन्दो घोष की समन्वित शिक्षा के परिप्रेक्ष में भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का विवेचन

सोनिया शर्मा (शोधार्थी)
कॉलिज ऑफ ऐजूकेशन, आई.आई.एम.टी. विश्वविद्यालय मेरठ

प्रोफेसर (डा०) संजीव कुमार (शोध पर्यवेक्षक)
कॉलिज ऑफ ऐजूकेशन, आई.आई.एम.टी. विश्वविद्यालय मेरठ

DOI: https://doi.org/10.36676/urr.v10.i4.1528
Published: 30/12/2023
* Corresponding author

सार संक्षेप

वर्ष 1986 की शिक्षा के लिए राष्ट्रीय नीति के लगभग 34 वर्षों के पश्चात भारत की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का क्रियान्वयन 31 जुलाई 2021 से समूचे भारत में हो गया है। यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा दर्शन एवं वैदिक विज्ञान के साथ–साथ शिक्षा के आधुनिक स्वरूप एवं तकनीकी आधारित नवीन शैक्षिक मॉडल और शिक्षण–अधिगम के प्रारूपों को अपनाने तथा उन्हें क्रियान्वित करने पर बल देती है। इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की सबसे अधिक खूबसूरती है कि यह विद्यार्थी पर ज्ञान थोपने का समर्थन नहीं करती है। यह नीति विद्यार्थी अनुभवाधारित अधिगम पर देती है। इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रस्तावना में भारतीय शिक्षा दर्शन के विचारों को समावेशित करने की झलक मिलती है। इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में महर्षि श्री अरबिन्दो घोष के इंटीग्रेटिड अथवा समेकित अथवा समग्र शिक्षा समावेशन उपयुक्त रूप में दिखायी देता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति लचीलेपन पर जोर देता है जो समन्वित शिक्षा दर्शन के मूल में है। अरबिंदो के अनुसार, सीखने की प्रक्रिया में मन के विकास में परामर्श किया जाना चाहिए ताकि व्यक्ति को बाहर से कुछ भी मजबूर करने के बजाय अपने स्वयं के स्वभाव का विस्तार करने के लिए समर्थन दिया जा सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मूल्यांकन के दृष्टिकोण में इसे व्यावहारिक रूप से लागू किया गया है। यह एक 360–डिग्री, बहुआयामी रिपोर्ट है जो संज्ञानात्मक, भावात्मक और मनोप्रेरक क्षेत्रों में प्रत्येक शिक्षार्थी की प्रगति के साथ–साथ विशिष्टता को दर्शाती है। इनमें आत्म–मूल्यांकन और सहकर्मी मूल्यांकन, और शिक्षक मूल्यांकन के साथ–साथ प्रोजेक्ट–आधारित और पूछताछ–आधारित सीखने, प्रश्नोत्तरी, भूमिका निभाने, समूह कार्य, पोर्टफोलियो आदि में बच्चे की प्रगति शामिल है। प्रस्तुत शोध पत्र में महर्षि अरबिंदों के समग्र शिक्षा से सम्बन्धित विचारों के परिप्रेक्ष में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की प्रासांगिकता को जानने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्दः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, समेकित शिक्षा, मूल्यांकन।

भूमिकाः

भारतीय शिक्षा दर्शन में अनेक दार्शनिकों एवं महापुरूषों का विशिष्ट योगदान राहा है जिनमें पमुख हैं– आदिगुरू शंकराचार्य, गुरूदेव रविन्द्रनाथ टैगोर, महर्षि अरबिंदो घोष, महात्मा मोहनदास कर्मचन्द गांधी, स्वामी विवेकानन्द, गिजूभाई बधेका, इत्यादि। इनमें से एक महर्षि अरबिंदो घोष ने भारतीय शिक्षा पद्धति में उस समय ऐसा दूरदर्शी एवं नूतन आयाम प्रस्तुत किया जोकि आज भी भारत ही नहीं अपितु विश्व के अनेक देशों में अनुकरणीय है तथा शिक्षण पद्धति में सम्मिलित है। उस समय महर्षि अरबिंदो ने समग्र शिक्षा अथवा एकीकृत शिक्षा का मॉडल प्रस्तुत किया जोकि भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक चमत्कार था।

महर्षि अरबिंदो ने मानव प्रकृति का पाँच रूपों में व्यवस्थापन किया है– शारीरिक, मानसिक, व्यवसायिक, सामाकि और आध्यात्मिक जोकि शिक्षा के पाँच पक्षों के अनुरूप हैं– शारीरिक शिक्षा, मानसिक शिक्षा, सामाजिक शिक्षा, व्यावसायिक कौशल शिक्षा और आध्यात्मिक या अतिमानसिक या योग शिक्षा। श्री अरबिंदो द्वारा सम्पादित दार्शनिक दृष्टिकोण से तीन मुख्य दार्शनिक योगदान देखे गए हैं। पहला है विकास की अवधारणा, जोकि महर्षि अरबिंदो के दर्शन का केंद्र है, दूसरा है समन्वित योग और तीसरा है समन्वित शिक्षा। श्री अरबिंदो के शिक्षा दर्शन को समन्वित शिक्षा कहा जाता है। समन्वित शिक्षा के तीन घटक हैं–

1. वह बालक जो सीखने की इच्छा रखता है।
2. ईश्वर जो समूचे ज्ञान का स्रोत है और
3. शिक्षक स्वयं ही संपर्क सूत्र, संचार माध्यम, स्वैच्छिक सहायक है।

© 2023 Published by Shodh Sagar. This is a Gold Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com

समन्वित शिक्षा वह है जो अधिगमकर्ता को पूर्णता प्रदान करती है। यह सभी द्वंद्वों को एकीकृत करती है। इसका ध्येय मानव व्यक्तित्व के भौतिक और आध्यात्मिक पक्षों को एकीकृत करना है। समन्वित शिक्षा वास्तविक रूप से किसी भी शिक्षा पद्धति की विरोधी नहीं है, अपितु यह सभी शिक्षा प्रणालियों की पूरक है। यह समन्वित है क्योंकि यह आत्म–एकीकरण की ओर ले जाती है अर्थात मानव व्यक्तित्व के समस्त पक्षों का एकीकरण करती है। (घोष, अरबिन्दो, 1956)।

महर्षि अरबिंदो के शैक्षिक दर्शन का मार्गदर्शक सिद्धांत व्यक्ति को आध्यात्मिक प्राणी के रूप में जागृत करना था; जिसमे बालक द्वारा आत्म–नियंत्रण के माध्यम से किया जाने वाले निम्नलिखित कार्य हैं:

(क) आत्म–खोज
(बी) आत्म–साक्षात्कार
(ग) आत्म–पूर्ति
(घ) आत्म–पूर्णता।

महर्षि अरबिंदो की समग्र शिक्षा के सिद्धांत:

1. कुछ भी सिखाया अथवा थोपा नहीं जा सकता:

शिक्षक कोई प्रशिक्षक या कार्यपालक नहीं है, वह एक सहायक एवं मार्गदर्शक है। शिक्षक की भूमिका 'सुझाव देने हेतु है, न कि थोपने के लिए'। वह वास्तव में शिष्य के मन को प्रशिक्षित नहीं करता, वह केवल उसे ज्ञान के साधनों को पूर्ण करने का मार्ग बताता है और इस प्रक्रिया में उसकी मदद करता है और उसे प्रोत्साहित करता है। वह उसे ज्ञान प्रदान नहीं करता, वह उसे प्रशस्त करता है कि वह अपने लिए ज्ञान कैसे अर्जित कर सकता है।

2. मन को अपने विकास में सुझाव लेना चाहिए; माता–पिता या शिक्षक द्वारा बनाए गए ढाँचे में बालक को ढालने का विचार एक कर्कश और अज्ञानतापूर्ण अंधविश्वास है:

''बालक को उसे स्वयं ही अपने स्वभाव के अनुसार विस्तार करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए''। माता–पिता या शिक्षक द्वारा बनाए गए ढाँचे में बालक को ढालने का विचार मानव आत्मा पर स्वार्थी अत्याचार है और राष्ट्र के लिए एक घाव है जो उस सर्वोत्तम लाभ को खो देता है जो एक व्यक्ति उसे दे सकता था और इसकी अपेक्षा उसे कुछ अपूर्ण और कृत्रिम, निम्न स्तर का, औपचारिक और सामान्य स्वीकार करने के लिए विवश किया जाता है''।

''प्रत्येक किसी के अंदर कुछ दिव्य, कुछ उसका स्वयं, पूर्णता और शक्ति का एक अवसर है, तथापि वह कितना भी छोटा क्षेत्र क्यों न हो जिसे ईश्वर उसे लेने या अस्वीकार करने के लिए प्रदान करता है। बालक का कार्य इसे खोजना, इसे विकसित करना और इसका उपयोग करना है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य अग्रसारित होती हुई आत्मा को वह सब कुछ निकालने में मदद करना होना चाहिए जो सर्वोत्तम है और इसे एक महान उपयोग के लिए परिपूर्ण बनाना चाहिए''।

3. 'निकट से दूर की ओर कार्य करना, जो है उससे जो होगा की ओर':

''मनुष्य की प्रकृति का आधार सदैव उसकी आत्मा के अतीत के अतिरिक्त, उसकी आनुवंशिकता, उसके आस–पास का वातावरण, उसकी राष्ट्रीयता, उसका देश, वह मिट्टी जिससे वह पोषण प्राप्त करता है, वह हवा जिसमें वह सांस लेता है, वे दृश्य, ध्वनियाँ, आदतें जिनका वह आदी है, होता है; वे सभी उसे कम शक्तिशाली रूप से नहीं ढालते हैं, क्योंकि वे अचेतन रूप से ढलते हैं, और फिर हमें उसी से शुरू करना चाहिए''।

''हमें प्रकृति को उस धरती से जड़ों से नहीं लेना चाहिए जिसमें उसे विकसित होना चाहिए या मन को ऐसे जीवन की छवियों और विचारों से घेरना चाहिए जो उस जीवन से अलग हो जिसमें उसे शारीरिक रूप से चलना चाहिए: यदि कुछ भी बाहर से लाना है, तो उसे प्रदर्शित किया जाना चाहिए, मन पर थोपा नहीं जाना चाहिए, एक स्वतंत्र और प्राकृतिक विकास वास्तविक विकास की शर्त है''।

महर्षि अरबन्दों के इन सिद्धांतों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में अग्रलिखित प्रकार से समावेशित किया गया है–

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और समन्वित शिक्षा दोनों के सिद्धांत अधिगम को अनुभवात्मक रूप में देखते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति शिक्षा में लचीलेपन पर जोर देती है जो समन्वित शिक्षा दर्शन के मूल में समाहित है। महर्षि अरबिंदो के अनुसार, अधिगम की प्रक्रिया में मन के विकास के सन्दर्भ में मार्गदर्शन किया जाना चाहिए ताकि अधिगमकर्ता को बाहर से सीखने हेतु विवश करने की अपेक्षा स्वयं का स्वाभाविक विकास करने के लिए योगदान दिया जा सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मूल्यांकन के आयाम में इसे व्यावहारिक रूप से अपनाने पर जोर दिया गया है। यह एक 360 अंश, बहुआयामी दस्तावेज़ है जो संज्ञानात्मक, भावात्मक और मनोगत्यातमक पक्षों में प्रत्येक शिक्षार्थी की प्रगति के साथ–साथ उसकी विशिष्टता को अभिव्यक्त करती है। इनमें आत्म–निर्धारण और सहकर्मी मूल्यांकन, और शिक्षक मूल्यांकन के साथ–साथ प्रोजेक्ट–आधारित और पूछताछ–आधारित सीखने, प्रश्नोत्तरी, भूमिका निभाने, समूह कार्य, पोर्टफोलियो आदि में अधिगमकर्ता की प्रगति सम्मिलित

© 2023 Published by Shodh Sagar. This is a Gold Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com

है। शिक्षा मंत्रालय के अधीन एक मानक–निर्धारक निकाय के रूप में राष्ट्रीय मूल्यांकन केंद्र, परख (समग्र विकास के लिए कार्य–निष्पादन मूल्यांकन, समीक्षा और ज्ञान का विश्लेषण) की स्थापना किये जाने का प्रस्ताव है, जोकि भारत के सभी बोर्डों के मान्यता प्राप्त विद्यालयों हेतु छात्र मूल्यांकन और आकलन के मानदंड, मानक और दिशानिर्देश निर्धारित करने, राज्य उपलब्धि सर्वेक्षण (एसएएस) का मार्गदर्शन करने और राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण (एनएएस) करने के मूल उद्देश्यों को पूरा करता है।

वर्तमान समय में कक्षा–कक्ष का वातावरण अत्याधिक प्रतिस्पर्धी है और अधिगमकर्ता की रुचियों को सम्भवतः ही कभी पूरा किया जाता है। किसी भी कक्षा का पाठ्यक्रम प्रत्येक बालक की आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं विकसित जाता है, अपितु वैश्विक मानकों की अपेक्षाओं के अनुरूप बनाया जाता है। माता–पिता का मानना होता हैं कि उनके बालक अपनी परीक्षाओं में अच्छे अंक लाएँ। इसलिए, वैकल्पिक शिक्षा प्रणाली या नए ढाँचे की बहुत जरूरत थी जो बाल–केंद्रित हो और जिसमें सीखने का लचीला अवसर हो। समग्र शिक्षा पूर्णता की शिक्षा है। यह सभी द्वंद्वों को एकीकृत करती है। इसका उद्देश्य मानव व्यक्तित्व के भौतिक और आध्यात्मिक आयामों को एकीकृत करना है।

एकीकरण तीन स्तरों यथा– व्यक्तिगत स्तर, राष्ट्रीय स्तर और दोनों की उन्नति पर है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (एनसीएफएसई) प्रस्तावित की है। इसके अन्तर्गत स्थानीय विषय–वस्तु और रूचि के अनुरूप राष्ट्रीय पाठ्यपुस्तकों का विकास करना प्रमुख गतिविधियों का एक हिस्सा है। छात्र विकास के लिए मूल्यांकन में बदलाव का उद्देश्य स्कूली शिक्षा प्रणाली में सांस्कृतिक बदलाव लाना है। यह योगात्मक है और मुख्य रूप से रटने के कौशल का परीक्षण करता है जो समग्र मूल्यांकन के लिए और अधिक नियमित और रचनात्मक है।

श्री अरबिंदो ने प्रारंभिक स्कूली शिक्षा में मातृभाषा की भूमिका पर जोर दिया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 बहुभाषावाद, बहुविषयक और समग्र शिक्षा को प्रोत्साहित करता है। वर्तमान व्यवस्था में यह बदलाव अनिवार्य था। विषयों के बीच विभाजन ने अंतराल उत्पन्न कर दिया है और बहुत कम लोग विभिन्न डोमेन में बिंदुओं को जोड़ने में सफल होते हैं। यह सुनिश्चित करना कि छात्र अपनी क्षमता और रुचि के आधार पर क्या सीखना चाहते हैं, इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति ढांचे के अधीन एक वृहद वरदान है। इससे पता चलता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में ''बाल–केंद्रित'' अभिविन्यास है। श्री अरबिंदो का कहना है कि बच्चों की व्यक्तिगत जरूरतों के प्रति अधिक रुचि और जवाबदेही होनी चाहिए, बच्चों को प्रतिक्रिया देने में अधिक इच्छा होनी चाहिए और उनके व्यवहार के प्रति अधिक सहिष्णुता और स्वीकृति होनी चाहिए। यह सब बालक को अपने व्यक्तिगत विचारों और मतों को व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करता है

टीमवर्क, लचीलापन और संचार के जीवन कौशल को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मान्यता दी गई है। इस नीति के अनुसार, एक शिक्षक छात्रों की वर्तमान आवश्यकताओं के आधार पर पाठ्यक्रम सामग्री बनाने में प्रशिक्षक की भूमिका निभाता है, वह कक्षा में सर्वोत्तम प्रथाओं को बढ़ावा देने में एक सुविधाकर्ता के रूप में कार्य करता है, और उसे मूल्यांकन, प्रतिक्रिया और अद्वितीय शिक्षण विधियों के नए रूपों को विकसित करने में खुद को लगातार समर्पित करना होता है।

निष्कर्ष:

अवलोकन के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भारत की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मे शिक्षा के लचीलेपन के साथ–साथ एकीकृत शिक्षा के स्वरूप को उसी सन्दर्भ में अपनाया गया है जिसे महर्षि अरबिन्दों घोष ने प्रस्तुत किया था। जिसमें विषयों को थोपने की अपेक्षा वांछित रूप से विषय चुनने की स्वतंत्रता बालक को दी गई है। रटने व लिखने के अतिरिक्त बालक के अनुभव आधारित (एक्सपीरियंशल लर्निंग) पर जोर दिया गया है। शिक्षा प्रदान करने के लिए परम्परागत रूप से हटकर मातृ–भाषा को अपनाने पर जोर दिया गया है। बालक को व्यावहारिक रूप से कुशल बनाने हेतु प्रायोगिक शिक्षा एवं आध्यात्मिक शिक्षा पर जोर दिया गया है जोकि महर्षि अरबिन्दों घोष का मुख्य शैक्षिक विचार एवं दृष्टिकोण था।

भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 समग्र, शिक्षार्थी–केंद्रित, लचीली और मूल्य–संचालित शिक्षा प्रदान करने पर केंद्रित है, जैसा कि एकीकृत शिक्षा के कई सिद्धांतों में परिलक्षित होता है। एनईपी 2020 संरचनात्मक और शैक्षणिक सुधार प्रदान करती है। श्री अरबिंदो की दृष्टि की गहराई गहन आध्यात्मिक और दार्शनिक अंतर्दृष्टि प्रदान करती है जो नीति के कार्यान्वयन को और बढ़ा सकती है। इस प्रकार, एनईपी 2020 के दृष्टिकोण के साथ एकीकृत शिक्षा के सिद्धांतों को एकीकृत करने से भारत में समग्र और मूल्य–आधारित शिक्षा प्रदान करने में मदद मिलेगी। राष्ट्रीय शिक्षा पर श्री अरबिंदो का दर्शन और एकीकृत शिक्षा के दृष्टिकोण के साथ शिक्षा प्रणाली 21वीं सदी में शांति और सद्भाव प्राप्त करने और बनाए रखने के लिए अत्यधिक महत्व और प्रासंगिकता रखती है।

© 2023 Published by Shodh Sagar. This is a Gold Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com

यह तभी संभव है जब मनुष्य भौतिकता से आध्यात्मिकता की ओर बढ़े। श्री अरबिंदो के अनुसार, "सच्चा सुख केवल आत्मा, मन और शरीर के प्राकृतिक सामंजस्य को खोजने और बनाए रखने में निहित है"। एनईपी 2020 ने शारीरिक शिक्षा, खेल, मनोरंजन और 'योग' पर बहुत जोर दिया है। श्री अरबिंदो द्वारा बताए गए 'एकात्म योग' पर बहुत जोर दिया गया है: 'सारा जीवन योग है। योग किसी भी अनुशासन का सामान्य नाम है जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी सामान्य मानसिक चेतना की सीमाओं से बाहर निकलकर एक बड़ी आध्यात्मिक चेतना में प्रवेश करने का प्रयास करता है"। एनईपी 2020 की तरह, श्री अरबिंदो का समग्र शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण भी मूल्य शिक्षा प्रदान करने और शांति, सद्भाव, वैश्विक नागरिकता और सबसे बढ़कर मानवता के लिए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने पर बहुत अधिक महत्व देता है।

बालक को वैधानिक रूप से प्राथमिक शिक्षा से पूर्व आरम्भिक शिक्षा को मान्यता प्रदान कर बालक के शैक्षिक विकास को मजबूत नींव प्रदान करने का विजन नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में स्पष्ट दिखायी देता है। यदि यह कहा जाये कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 वर्तमान भारत सरकार द्वारा महर्षि अरबिन्दों घोष को उनके शैक्षिक दर्शन के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है, अतिश्योक्ति नहीं होगी।

सन्दर्भः

1. अवस्थी अमरेश्वर. आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन, रिसर्च पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1997, पृ.422.
2. गुप्त, लक्ष्मी नारायण. महान, पाश्चात्य एवं भारतीय शिक्षाशास्त्री, कैलाश प्रकाशन, इलाहाबाद, 1992.
3. गुप्ता, एस.पी.. भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एव समस्यायें, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 1998.
4. जोशी, शान्ति. समसामयिक भारतीय, दार्शनिक लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1975.
5. Ahmed, M. & Godiyal, S. (2021). Study of Educational and Philosophical Thought of Aurobindo Ghosh and Its Relevance in Present Education Scenario, Asian Basic and Applied Research Journal.03(4):3034.
6. Chanda Rani (2017) A Study of Educational Vision of Aurobindo Ghosh; The International Journal of Indian Psychology ISSN 2348-5396(e), ISSN: 2349- 3429 (p) Volume 5, Issue 1, DIP: 18.01.125/20170501 DOI: 10.25215/0501.125
7. Concept Note: Viksit Bharat @ 2047; Concept Note for Discussion with Universities on Vision for 2047, https://innovateindia.mygov.in/viksitbharat2047/ Accessed on 15-03-2024, Friday.
8. Das, P. K. (2020). Educational philosophy and contribution of Sri Aurobindo to the field of education. International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT). 8(7), 1697-1701.
9. Debashri Banerjee (2016) National Education Theory of Sri Aurobindo; International Journal of Research in Humanities and Social Studies; Volume 3, Issue 1, January 2016, PP 34-40 ISSN 2394-6288 (Print1) & ISSN 2394-6296 (Online)
10. Dey, K. (2021). A Study on philosophy and educational thoughts of Sri Aurobindo Ghosh. International Journal of Trend in Scientific Research and Development. 5(2), 864-865.
11. Gorain, S.C. & Gayen, P. (2023). Re-construing Sri Aurobindo ghosh from educational viewpoint. International Journal of Multidisciplinary Research. 9(4), 280-283.
12. Mohanty, S.B. (2022). Educational Thoughts of Sri Aurobindo. University News. 60(33), 15-21.
13. Nimesh Joshi & Mr. Punit Pathak (2024) Sri Aurobindo and The Mother's Educational Views in the Light of NEP 2020[An Unpublished paper presented at an International Conference organized by AURO University Surat Themed on "Indian Academic Issues: Indian Knowledge System" 21-23 December,2023
14. Sawant, R.G. & Sankpal, U.B. (2021). National education policy 2020 and higher education: A brief review. International Journal of Creative Research Thoughts.9(1), 3456-3460.
15. Seikh, H.A. (2020). Philosophical thoughts of Aurobindo: Its impact on modern educational system. International Journal of Engineering Applied Sciences and Technology. 5(8), 232- 234.
16. Sindhuja, C.V. & Prof Ashok, H.S. (2024) National Education Policy 2020 takes the holistic path laid down by Sri Aurobindo. India Chapter.In.

© 2023 Published by Shodh Sagar. This is a Gold Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com

ISSN: 2348-5612 | Vol. 10 | Issue 4 | Oct - Dec 2023 | Peer Reviewed & Refereed

17. Singh, A.P & Rajauria, A. (2023) "Shri Aurobindo's Educational Thought and National Education Policy 2020 in Contemporary Context" held on 10 and 11 August 2023 at Babasaheb Bhimrao Ambedkar University, Lucknow, India.
18. Zaki, S. (2022). Relevance of Sri Aurobindo's philosophy of education to national education policy 2020. International Journal of Health Sciences, 6(S3), 9601–9608.

© 2023 Published by Shodh Sagar. This is a Gold Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com